

सम्पादकीय

खड़गे के सामने नहीं टिक पा रहे शशि थर्स्टर, गांधी परिवार की योजना सही दिशा में बढ़ रही है

अगले वर्ष मध्य प्रदेश में जब विधानसभा के चुनाव होंगे, तब वहाँ मुख्यमंत्री उम्मीदवार को लेकर कमलनाथ और दिविजय सिंह में अच्छे से ठनेगी, इसकी आशंका भी अभी से जग गई है। कुल मिलाकर, अध्यक्ष पद का चुनाव अब दिलचस्प मोड़ पर आ चुका है। सर्वेंस और हॉरर हॉंटी फिल्म की तरह हो गया है कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव। प्रत्येक घंटे कुछ ना कुछ अप्रत्याशित बदलाव हो रहे हैं। कौन नामांकन भर रहा है, कौन पीछे हट रहा है, यही डामा बीते कुछ दिनों से दिल्ली के 24 अकबर रोड स्थित कांग्रेस मुख्यालय पर देखने को मिल रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष पद को लेकर लगाए गए राजनीतिक पंडितों के भी अभी तक के सभी कायास फेल हो गए हैं। कहानी अब मलिलकार्जुन खड़गे और शशि थरूर पर आकर लुक गई है। जबकि, शुरूआत राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से हुई थी। रेस में उनके पिछड़ने के बाद कांग्रेस के दूसरे कदावर नेताओं जैसे दिविजय सिंह व कमलनाथ और ना जाने कितने धूंधरों के ईंदिगिर्द अध्यक्ष बनने की गेंद धूमती रही। पर, कहानी में घंटे-घंटे भर बाद मोड़ कुछ ऐसे आए जिससे उपरोक्त नाम एक-एक करके किनारे होते गए। इसी दरम्यान मौजूदा अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपनी धूपी तोड़ी और अपने सबसे वफादार नेता कमलनाथ के नाम पर उन्होंने गर्दन हिलाकर स्वीकृति देकर उन्हें रात में ही भोपाल से दिल्ली तलब किया। लेकिन जब वह आए तो उन्होंने अपनी भविष्य की राजनीतिक महत्वकांक्षा सोनिया गांधी को बताकर कांग्रेस अध्यक्ष पद के संभावित उम्मीदवार से अपना नाम हटवा लिया। दरअसल, अगले साल मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने हैं, जहाँ कमलनाथ खुद को मुख्यमंत्री के तौर पर देख रहे हैं। क्योंकि ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में जाने के बाद मुख्यमंत्री उम्मीदवारी में उनका नाम सबसे आगे है जिस पर दिल्ली के शीर्ष नेतृत्व की भी हामी है। हालांकि इस कड़ी में पूर्व मुख्यमंत्री दिविजय सिंह भी कतार में हैं। पर, उनकी दावेदारी कही कारणों से कमलनाथ के मुकाबले कमज़ोर है। लेकिन, मुख्यमंत्री बनने की महत्वकांक्षा उनमें भी कमलनाथ से कम नहीं है। उनके भीतर भी रात दिन मुख्यमंत्री बनने के सपने हिलोरे मारते हैं। इसी कारण उन्होंने भी कांग्रेस अध्यक्ष पद की उम्मीदवारी में कुछ खास दिलचस्पी नहीं दिखाई।

अगले वर्ष मध्य प्रदेश में जब विधानसभा के चुनाव होंगे, तब वहाँ मुख्यमंत्री उम्मीदवार को लेकर कमलनाथ और दिविजय सिंह में अच्छे से ठनेगी, इसकी आशंका भी अभी से जग गई है। कुल मिलाकर, अध्यक्ष पद का चुनाव अब दिलचस्प मोड़ पर आ चुका है। सबसे बड़ा सावल ये हो कि मलिलकार्जुन खड़गे के सामने अब खड़ा कौन हो पाएगा? उनके कद के नेता शशि थरूर को नहीं माना जा रहा। जबकि, कतार में अब ये दो ही बचे हैं। इस लिहाज से कहीं समय आते-आते ऐसा ना हो कि मलिलकार्जुन खड़गे निर्विरोध अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित हो जाए। क्योंकि कतार के तीसरे उम्मीदवार के एन त्रिपाठी का नामांकन रद्द हो चुका है।

फिर साबित हुआ, छैनो को चोट ने 'भगवान' बना दिया

दद बड़ा बदद हाता...इस शब्द में बाधना बहुत मुश्किल है। दद ना रखत-नात देखता है...न अपने-पराया। दद तो दद है जब भी किसी पर टूटता है तो तोड़कर रख देता है। बिले ही होते हैं जो खड़े रह पाते हैं। ऐसा ही एक नाम है हिमांगी का। नाजों से पली हिमांगी ने बचपन में ही जिंदगी के कई रंग देख लिए। शान-ओ-शोकत भी देखी तो गुरबत में भी दिन गुजारे। दो रोटी के लिए पड़ेसियों के ताने सहे...बर्तन भी साफ किए। छोटे से बड़े...सभी ने कई बार दुष्कर किया, वह भी सहा। सगे-संबंधी अपने ना रहे...वक्त ने बता दिया कि अपने-परायों के चेहरे कैसे होते हैं। पिता की मौत के बाद परेशानियों का जो दौर शुरू हुआ उसे शब्दों में व्यक्त करना बहुत मुश्किल है लेकिन हिमांगी ने हर दर्द सहा...हर दर्द के बाद और निखरती गई....शायद उसने खुद से ही बाद किया था कुछ कर गुजारे का। कहन्हैसा से लौ लार्ग और वुंदावन चल आई। शास्त्रों का अध्ययन किया...गीता पढ़ी। देश-विदेश में कथा वाचन करने भी गई। लग जिंदगी पटरी पर आ रही है...इसी बीच फिर मुसीबतों का पहाड़ टूटता है और हिमांगी के किन-



होने का खुलासा होता है। उसे मठ से निकाल दिया जाता है। बेदर्द जमाने के सामने रोने गिडिगड़ाने से पेशर वह बांकेबिहारी के सामने खूब रोड़...। आज यही हिमांगी निर्मोहीं अखांड की महामंडलेश्वर है। दुनिया की पहली किन्नर पुराण लिख रही है। हिमांगी की यह दास्त किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है लेकिन सच यह है कि संघर्षों की दास्तां उसने खुलिखी....खुद ने खुद से बाद किया कुछ कर गुजने का...और हिमांगी निर्मोहीं अखांड के महामंडलेश्वर बन गई...। अर्थात् युवा पीढ़ी के लिए हिमांगी एक मिसाल हो सकती है। दस बारह साल की जिंदगी में सब कुछ खत्म हो जाने पर भी वह टूटनी नहीं। लड़ी और बराबर लड़ी...समाज से...प्रशासन से...अपनों से...परायों से...लेकिन हार नहीं मानी। यही बजह रहा कि वे पहली महामंडलेश्वर सखी कहलाई। असल में संघर्ष हमें तोड़ना नहीं जोड़ता है...एवं ऐसे पथ से...जिस पर चलकर हम कोई नया मकाम बना सकते हैं लेकिन हम तो लकीर के फकीर हैं। जरा सी चोट से बिखर जाते हैं। याहां-वहां आदर्श ढंगने लगते हैं...आशीर्वाद मांगने के फिरते हैं। गंठे-ताबीज बांधने लगते हैं किन्तु ये हमारी कुछ काम नहीं आते हैं, क्योंकि जिंदगी की लड़ाई हमें स्वयं ही लड़नी पड़ती है। सुना है, सूफी फकीर बायजीद किसी गांव से गुजरता था। उसने देखा कि उसके पीछे ही उसके चरण-चिन्हों पर...ठीक चरण-चिन्हों पर पर रखता है यह एक युवक चला आ रहा है। इधर-उधर पैर नहीं रखता। जहां-जहां बायजीद के चरण पड़ते हैं, वहाँ पैर रखता है। बायजीद बाएं मुड़ता है, बायजीद दाएं मुड़ता है, तो वह बाएं मुड़ता है, थोड़ा उसका मजा लेने के लिए बायजीद काफी गोल-गोल चलाता लगा। मगर वह युवक भी धून का पवका है। वह ठीक पीछे लागा है...आया की तरह। वह ठीक चरण-चिन्हों पर ही पैर रखता है! अंत में उसने बायजीद से कहा कि देखते हैं, आपके चरण-चिन्हों पर चल रहा हूँ, बड़ा आनंद मिला। आपके सतर्पण से बड़ा रस आया। अब एक कान करे, आपके कपड़े का एक टुकड़ा मुझे फाड़ कर दें, उसकी मैं ताबीज बना लूँगा। बहुत से देशों में ऐसा ख्याल है कि संत के कपड़े का टुकड़ा मिल जाए, तो ताबीज बन जाएगा। बायजीद ने कहा कि सुन, तू कान्डे का टुकड़ा क्या, अगर मेरे चमड़े का टुकड़ा भी ले जाए, तो वी ताबीज न बनेगा। बदूल आपी उस ताबीज में। मेरे चमड़े के टुकड़े से मेरा क्या संबंध। मेरा संबंध नहीं मेरे चमड़े से, तो मेरे कपड़े से तो मेरा क्या संबंध है! पागल हुआ है? लेकिन यह युवक जिस पर अड़ा रहा। उसने कहा-नहीं, आपका आशीर्वाद तो चाहिए ही। बायजीद ने कहा, मेरे आशीर्वाद चाहिए हो तो मेरी सुन। मेरे पैरों के चिन्हों पर चलने से कुछ न होगा। नकल करने से कुछ भी न होगा। बायजीद ने सौ बार कहा...हजार बार कहा...अनंत बार कहा लेकिन किसी ने नहीं माना। आज भी हम भटक रहे हैं। युवा पीढ़ी जरा से संघर्ष से टूट जाती है। बड़ी-बड़ी सेलिब्रिटी गलत रास्तों पर चल पड़ती हैं...कई बार तो आत्महत्या जैसा कदम उठाने से भी पीढ़ी नहीं हटते। गंठे-ताबीज में एतबार हैं। तो बायजीद का सदेश साफ है। संघर्ष का नाम ही जिंदगी है। खुद महामंडलेश्वर हिमांगी सखी इसका उदाहरण है। हिमांगी ने तमाम झांगावाला सहे...लड़ती रहीं...लड़ती रहीं और आज महामंडलेश्वर के प्रतिष्ठित आसन पर बिराजमान हैं। उनका किन्नर होना भी इसके सामने गौण हो गया। हिमांगी पर फिल्म भी बन रही है।... तंजिंदगी जिएं और बिंदास जिएं...संघर्ष आने पर घबराएं नहीं। इसे जीवन की ट्रेनिंग मानक आत्मसात कर लें। यक्को मानिए, छैनी की चोट के बाद ही 'भगवान' का जन्म होता है।

सांस लेना भी हो गया है दुर्लभ

A colorful illustration depicting industrial pollution and traffic. In the upper half, a factory with several tall chimneys is shown, each emitting thick plumes of dark grey smoke. The factory buildings are various colors including yellow, red, and blue. In the lower half, a road is shown with three cars: a blue sedan on the left, an orange bus in the center, and a green sedan on the right. Each car has a small black plume of smoke or dust trailing behind it, representing vehicle emissions.

एक स्टॉडी में सामने आया है कि यातायात प्रदूषण से भारत में सादे तीन लाख बच्चों को अस्थमा हो गया है। चीन के बाद इस बीमारी के से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाला दूसरा देश भारत है। भारत में सरकारी और निजी स्तर पर जागरूकता के आभाव का कारण बच्चे से बुजुर्ग तक प्रदूषण के चपेट में हैं औ इससे पीड़ित लोगों का आंकड़

निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।
बच्चे मासूम हैं और इस खतरे से नावाकिफ है। बच्चों की सेहत की रक्षा करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। हमारे नौनिहाल यदि आँख खोलते ही इसकी चपेट में आ गए तो भविष्य पर सवाल उठाना लाजमी है। यातायात प्रदूषण के अनेक कारण हैं जिन पर लम्बी बहस की जा सकती है मगर जरुरत

इस बात की है की हम उन कारणों को दूर करें जिनकी बदौलत बच्चों की सेहत पर बुरा असर पढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण वे वाहन हैं जो निरंतर धुंवा छोड़कर बच्चों को आहत कर रहे हैं। भारत में किसी भी यातायात चौराहे पर खड़े होकर हम देखे तो पाएंगे जहरीली गैस हमारे पर्यावरण को खराब कर रही है। इसके लिए कोई दूसरा नहीं बल्कि हम खुद जिम्मेदार हैं। आने वाले खतरे को हम खुद आमंत्रित कर रहे हैं और इसका दोष सरकार पर मंड देते हैं। पहले हमें खुद को सुधारना होगा फिर यह सीख दूसरों को देनी होंगी तभी सुधारात्मक उपाय सार्थक होंगे और प्रदूषण से बचा जा सकेगा।

किशनबाग पर्यटकों के लिए एक अद्भुत स्थान

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रविवार को जयपुर स्थित किशनबाग सैड ड्यून पार्क का अवलोकन किया। गहलोत ने किशनबाग में स्थित विविध मरुस्थलीय वनस्पतियों, पुरातन चट्टानों, मरुस्थलीय टीलों तथा राजस्थानी पद्धति से बने मचानों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने पार्क के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने पार्क के रेतीले क्षेत्र में उगाई गई स्वदेशी वनस्पति, प्रदेश के अलग-अलग जिलों से लाई गई पहाड़ी तथा भूमिगत चट्टानों, जीवाश्म एवं उनके माध्यम से राज्य के प्राकृतिक इतिहास के वर्णन की सराहना की। श्री गहलोत ने पार्क में रेगिस्टानी रोड (झाड़ीनुमा जंगल) में उगने वाली विभिन्न प्रकार की झाड़ियों तथा अन्य वनस्पतियों को देखा



है कि राजस्थान की धरती बंजन होकर विभिन्न प्रकार के झाड़ियां घास व जैव-विविध

र लिए हुए हैं तथा सैंकड़ों प्रजाति
व के पक्षी व जानवर इसके द्वारा
पोषित होते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किशनबाग पर्यटकों के साथ-साथ विद्यार्थियों शोधकर्ताओं पर्व

भूगोलवेत्ताओं के लिए भी एक
अद्भुत स्थल है। यहां आमज
अपने परिवार के साथ आकर

सुकून भरा समय बिता सकते हैं। पार्क में आमजन को प्रकृति से जुड़ी विभिन्न प्रकार की रोचक जानकारी भी मिलती है। उन्होंने कहा कि किशनबाग को निमार्ताओं के द्वारा एक रचनात्मक ढंग से बनाया गया है। यहां प्रबंधन का शानदार कार्य किया गया है। साथ ही गाइड्स की जानकारी भी उत्कृष्ट स्तर की है। इस दौरान उन्होंने किशनबाग में घूमने आए आमजन से मुलाकात की तथा उनके अनुभव को जाना। श्री गहलोत ने कहा कि किशनबाग हमें रेगिस्टानी बनस्पति के संरक्षण की प्रेरणा

देता है।
इस दौरान उद्योग मंत्री
शकुंतला रावत, खाद्य आपूर्ति
मंत्री प्रताप सिंह
खाचरियावास एवं उप मुख्य
सचेतक महेन्द्र चौधरी सहित
अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित
रहे।

तरंत सर्वे चाल कर शीघ्र कार्यवाही परी करने के निर्देश दिए

कृषि एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों ने टोंक, बूंदी एवं कोटा जिले में फसल खराबे का जायजा लिया

जयपुर। कृषि विभाग के प्रमुख शासन सचिव दिनेश कुमार और आयुक्त कानाराम ने विभागीय अधिकारियों तथा जिला कलेक्टर्स के साथ रविवार को टोकं, बूँदी एवं कोटा जिलों का दौरा कर बरसात से खराब हुई फसलों का जायजा लिया। उहनोंने कृषि एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों तथा बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक में फसल खराबे की स्थिति की समीक्षा की और तुरंत सर्वे चालू कर शीघ्र कार्यवाही पूरी करने के निर्देश दिए। प्रमुख शासन सचिव एवं कृषि आयुक्त ने जिला कलेक्टर और विभागीय अधिकारियों को जिला कलेक्टर के लिए नियुक्त किया गया था।

टोंक जिले के मुँडिया,
मेहंदवास तथा बंथली गांव में
बरसात से खराब हुई बाजरा
एवं अन्य फसलों का निरीक्षण
किया और मेहंदवास सहायक
कृषि अधिकारी कार्यालय में
कृषि और राजस्व विभाग के
अधिकारियों तथा बीमा कंपनी
के प्रतिनिधियों के साथ बैठक
कर नुकसान की समीक्षा की।
इस दौरान उन्होंने ऑनलाइन
प्राप्त हुई करीब 52 हजार
फसल खराबे की सूचनाओं का
सर्वेक्षण करने के साथ किसान
से 72 घंटे में टोल फ्री नंबर,
एप्या लिखित में खराबे की
सूचना दिलावाने, किसानों को
प्राप्त रसीद देने तथा राजस्व

के साथ संयुक्त सर्वे करने के निर्देश दिए। उन्होंने आगामी रबी फसलों की बुवाई के समय को देखते हुए नुकसान का सर्वे प्राथमिकता से तीन-चार दिन में पूरा करने के निर्देश दिए। कृषि विभाग के आला अधिकारियों ने बांदी में जिला कलेक्टर डॉ. रवींद्र गोस्वामी के साथ जिले के तालाब गांव एवं गणेशपुरा क्षेत्र में धान एवं अन्य फसलों में हुए नुकसान का जायजा लिया और किसानों से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने बीमा कंपनी को संवेदनशीलता के साथ कार्य करते हुए प्राप्त शिकायतों का अगले 7 दिन में निस्तरण करने के निर्देश दिए।

में राजस्व विभाग एवं कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की और एसडीआरएफ के प्रावधानों के तहत कार्रवाई करने के भी निर्देश दिए।
कृषि विभाग के प्रमुख शासन सचिव दिनेश कुमार एवं आयुक्त श्री कानाराम ने कोटा जिले के बड़गांव का भ्रमण कर सौयाबीन और धान की फसल में हुए खराबे की विस्तृत जानकारी ली और मौके पर ही बीमा कंपनी के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वह प्रभावित किसानों से 72 घंटे के अंदर आॅनलाइन फसल खराब होने की शिकायत दर्ज की जाए।

किसान शिकायत दर्ज नहीं करा पाता है तो उसकी शिकायत निर्धारित प्रारूप में तय समय में आवश्यक दस्तावेज के साथ प्राप्त कर दर्ज करें। उन्होंने बीमा कंपनी के अधिकारियों को निर्देश दिया कि शिकायत दर्ज होने के 7 दिन में सर्वे पूर्ण कर सूचना कृषि आयुक्तालय, जिला कलेक्टर तथा सर्बीघित उपनिदेशक कार्यालय को भिजवाएं। दिनेश कुमार और कानाराम ने निरीक्षण के बाद कोटा में वीस के माध्यम से संभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर वर्षा से हुए फसल खराबे के बारे में बातचीज़ की।

ली एवं अधिकारियों को
आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।
उन्होंने संभागीय अधिकारियों
को निर्देशित किया कि राजस्व
मंडल अजमेर द्वारा आवंटित
समस्त फसल कटाई प्रयोग
ऑनलाइन ही संपन्न कराएं
जिससे फसल बीमा कंपनियों
द्वारा खराबे की गणना कर
समय पर क्लेम जारी किया जा
सके। बैठक में संभागीय
आयुक्त श्री दीपक नंदी, जिला
कलेक्टर श्री ओपी बुनकर,
अतिरिक्त निदेशक कृषि
(आदान) श्री यशपाल
महावत सहित कृषि एवं
राजस्व विभाग के उच्च
अधिकारी तथा बीमा कंपनी
ने भी इसी दिन दो

